

Padma Shri



SHRI OM PRAKASH “GANDHI”

Shri Om Prakash “Gandhi” is the founder of Gurjar Kanya Gurukul Institute. He is a name known for his tremendous contribution in the field of girls' education and social reforms. He started his journey of imparting education by starting a small school in a faraway tiny village Devdhar in District Yamunanagar, Haryana, a remote area, where women education and the awareness about it was almost none. His endless efforts changed the lives of the girls of this area exquisitely. Today, the girls from this Institute are reaching the new heights in all the spheres of life.

2. Born on 1st February, 1942 in Village Madhobans, District Yamunanagar of Haryana Province, Shri Om Prakash's father Shri Ranjit Singh was a small farmer and his mother Smt. Kamia Devi was a housewife. He completed his B.Sc from Agra University and M.Sc from Meerut College, Meerut. For twenty years he worked as a Professor of Physics in Gochar Krishi College Rampur Maniharan, Uttar Pradesh.

3. Shri Om Prakash's strong inclination towards women education and social reforms inspired him to work for a larger cause and he voluntarily retired from the service in 1983 and devoted the rest of his life to the education of women and their upliftment to build a strong and reformed society. His commitment was so strong that he remained unmarried and dedicated his entire life to the cause. He visited the entire area and shared his concerns and vision with the people. With very few people of same mindset, he formed Kanya Vidya Prachirini Sabha and in 1987 started a primary school by the name of Gurjar Kanya Vidya Mandir for which he successfully procured the recognition as a Residential Senior Secondary School in the year 1997. In the year 2015, he went ahead and opened Gurjar Kanya Mahavidyalaya and in January, 2022, he started construction work of Samrat Mihir Bhoj Gurukul Vidyapeeth for boys.

4. Shri Om Prakash went from places to places, in remote areas to fetch donations. Donations were a tough task to accomplish, it was his selfless and untiring efforts and belief of people in his cause and vision that made it a bit easy. It was his consistent efforts in the direction of school reforms which were recognized and he was honoured by various prestigious awards. For his dedication, persistent work and contribution for the society, he was given the name "Gandhi Ji" by the people, as he stood for what he truly believed in and changed the whole society around, for the good.

पद्म श्री



श्री ओम प्रकाश “गांधी”

श्री ओम प्रकाश गांधी गुर्जर कन्या गुरुकुल संस्थान के संस्थापक हैं। उन्हें लड़कियों की शिक्षा और सामाजिक सुधारों के क्षेत्र में अपने जबरदस्त योगदान के लिए जाना जाता है। उन्होंने शिक्षा प्रदान करने की अपनी यात्रा की शुरुआत हरियाणा के यमुनानगर जिले के एक दूर के छोटे से गाँव देवधर में एक छोटे से स्कूल से की, जहाँ महिला शिक्षा और उसके बारे में जागरूकता लगभग नहीं के बराबर थी। उनके अथक प्रयासों ने इस क्षेत्र में आमूल-चूल परिवर्तन कर दिया। आज इस संस्थान की लड़कियाँ जीवन के सभी क्षेत्रों में नई ऊँचाइयों को छू रही हैं।

2. 1 फरवरी, 1942 को ग्राम माधोबंस, जिला यमुनानगर हरियाणा प्रांत में जन्में, श्री ओम प्रकाश के पिता श्री रंजीत सिंह एक छोटे किसान थे और उनकी माता श्रीमती कामिया देवी गृहिणी थीं। उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से बीएससी और मेरठ कॉलेज, मेरठ से एमएससी की पढ़ाई पूरी की। बीस वर्षों तक उन्होंने गोचर कृषि कॉलेज रामपुर मनिहारन, उत्तर प्रदेश में भौतिकी के प्रोफेसर के रूप में काम किया।

3. महिला शिक्षा और सामाजिक सुधारों के प्रति श्री ओम प्रकाश की दृढ़ इच्छा शक्ति ने उन्हें एक बड़े उद्देश्य के लिए काम करने के लिए प्रेरित किया और वे स्वेच्छा से 1983 में सेवा से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने अपना शेष जीवन समाज में सुधार लाने और उसे सुदृढ़ बनाने के लिए, महिलाओं की शिक्षा और उनके उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। उनकी प्रतिबद्धता इतनी मजबूत थी कि वे अविवाहित रहे और अपना पूरा जीवन इसी उद्देश्य को समर्पित कर दिया। उन्होंने पूरे क्षेत्र का दौरा किया और लोगों के साथ अपनी चिंताओं और दूरदर्शिता को साझा किया। समान मानसिकता वाले बहुत कम लोगों के साथ मिलकर उन्होंने कन्या विद्या प्राचिरिणी सभा का गठन किया और 1987 में गुर्जर कन्या विद्या मंदिर के नाम से एक प्राथमिक विद्यालय शुरू किया जिसके लिए उन्होंने वर्ष 1997 में आवासीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के रूप में सफलतापूर्वक मान्यता प्राप्त की। वर्ष 2015 में, उन्होंने आगे बढ़कर गुर्जर कन्या महाविद्यालय खोला और जनवरी, 2022 में उन्होंने लड़कों के लिए सम्राट मिहिर भोज गुरुकुल विद्यापीठ का निर्माण कार्य प्रारंभ किया।

4. श्री ओम प्रकाश ने चंदा एकत्र करने के लिए खूब यात्राएँ की। चंदा एकत्र करना एक कठिन काम था, यह उनके निस्वार्थ और अथक प्रयासों और लोगों के मन में इनके उद्देश्य और दृष्टि में विश्वास था जिसने इस कार्य को थोड़ा सरल बना दिया। स्कूल सुधारों की दिशा में उनके निरंतर प्रयासों को मान्यता मिली और उन्हें विभिन्न प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया। समाज के लिए इनके समर्पण, लगातार काम और योगदान के लिए इन्हें लोगों द्वारा “गांधी जी” नाम दिया गया था, क्योंकि वे वास्तव में जिस चीज में विश्वास करते थे, उसके लिए खड़े रहे और पूरे समाज को भलाई के लिए बदल दिया।